रात्रि क्लास 18/11/68:– बाप भी आ गया, टीचर, गुरु भी आ गया। तीनों आये हैं ना। यह बुद्धि में बैठा, बाप टीचर भी है, गुरु भी है। वही बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं। तो ज़रूर कोई को बताया होगा। तुम गॉड फादर को याद करते हो, मालूम है कि वह टीचर भी है। बैज तो लगा रहता है। चलते-फिरते कोई का कल्याण करना है। फिर माने न माने। बगल में दूसरा सुनता रहेगा। परमपिता परमात्मा ...ो जानते हो। शिवबाबा है ना। सभी आत्माओं का बाप है तो ज़रूर कब आया होगा और वर्सा दिया होगा। शिव जयंती भी है। बाप ज़रूर वर्सा भी देते होंगे। दो बाप से वर्सा मिलता है। एक लौकिक और एक पारलौकिक। और कोई बाप से मिलता नहीं। तो फिर उनको बाप मानते हैं ज़रूर; क्योंकि मनुष्य सृष्टि की रचना होती है। बाकी वर्सा नहीं मिलता है। ख्याल करें तो जो शिवबाबा से वर्सा मिलता है वह ब्रह्मा से भी मिलता है। ब्रह्मा को भी विश्व की बादशाही मिलती है। शिवबाबा आत्माओं को पढ़ाते हैं। यह है नई बात। गीता में कृष्ण का नाम है। छोटा टीचर बन पढ़ा न सके। कृष्ण को कब बड़ा नहीं दिखाते हैं। यह कोई का भी

ख्याल नहीं चलता बड़ा बना वा नहीं। क्या सदैव छोटा ही रहा। कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष भी कहते हैं। रोशनी और अंधियारी रात। वह तो कॉमन है। अपन फिर बेहद का दिन और बेहद की रात बताते हैं। तो बुद्धि में आना चाहिए बाबा टीचर भी है, गुरु भी है। बाबा के पास हम जाते हैं रिफ्रेश होने वा माया से बच कर जाते हैं बाप के पास। यहाँ माया नहीं सतावेगी। वास्तव में यह स्थान है स्वर्ग से भी ऊँच। काल उनको खाता है जो देह-अभिमानी हैं। देहीअभिमानी तो आपे ही पुरुषार्थ करते हैं शांतिधाम जाने लिए, तो ऐसे नहीं कहेंगे काल खा गया। शूद्र सम्प्रदाय के लिए कहेंगे, काल खा गया। तुम तो पुरानी दुनिया से जाते हो। यह है बेहद का सन्यास। वह सन्यासियों का है हठयोग, हद का सन्यास। तुम्हारा फिर है बेहद का सन्यास, जो इस संगमयुग पर ही तुम करते हो। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया कब्रिस्तान होनी है। त्रिमूर्ति में भी स्थापना-पालना-विनाश है। स्थापना नई दुनिया की, विनाश पुरानी दुनिया की। यह भी ज़रूर है। बीच को संगमयुग कहते हैं; परंतु इनका किसको भी पता नहीं है। पुरुषोत्तम मास बनाते हैं। तो बच्चों को यह ख्याल आना चाहिए हम बेहद के बाप के पास भी जाते हैं, बेहद के टीचर, बेहद के सद्गुरु के पास भी जाते हैं। यह है जैसे कि पत्थर फेंकना। तो आपे ही पूछेंगे। भारत को बेहद का वर्सा था ना। स्वर्ग के मालिक थे। और कोई धर्म था ही नहीं। ज्ञान तो बहुत सहज है। सिर्फ बाप को याद करने की मेहनत है। बाप को याद करने से ही पावन बनेंगे। जिसको आदत पड़ जावेगी, बस यही धंधा आदि करते रहेंगे, घूमते-फिरते ट्रेन में भी। चित्र तो ज़रूर रहना चाहिए। तुम बच्चों के पास बैज 5, जेब में भी पड़े हयु हों। कोई अच्छा आदमी हो तो दो। बोले, पैसा? बोलो, यह है सच्ची गीता। तुम जो द्वापर से पढ़ते आये हो, जबकि वाममार्ग शुरू हुआ है तबसे रावण राज्य हुआ है। मनुष्य पतित हुये हैं। सतयुग में मनुष्य पावन थे। फिर रावण ने आकर पतित बनाया। रावण राज्य को पतित राज्य कहा जाता है। तुम बच्चों की बुद्धि में ठुँसा रहना चाहिए। इस खुशी से समझाना चाहिए। बहुतों का कल्याण होगा तो फिर हमको भी लिफ्ट मिलेगी। खुशी में उतरते भी ऐसे हैं, फिर चढ़ने भी ऐसे हैं; परंतु उतरने में टाइम लगता है। जब कहते हैं भूल जाता हूँ। अच्छा तीनों को थोड़े ही भूलना चाहिए। स्टूडेंट हो। टीचर को तो याद करो। सद्गुरु को याद करो; परंतु माया तीनों को भुलाये देती हैं। इतनी बलवान है। बाप भूलता है तो वह दोनों भी साथ में भूल जाते हैं। यह भी अलौकिक कर्तव्य समझना चाहिए कोई को बाप का मैसेज़ देना। तुम सभी पैगम्बर हो। बाप पैगाम देते हैं मन्मनाभव। बाप और वर्से को याद करो। बाप पैगाम देने आये हैं। और कोई को भी पैगम्बर नहीं कहा जाता। दुनिया नहीं जानती है। मोस्ट इज़ी अलफ और बे का पैगाम है। अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो तो बादशाही मिलेगी। बस। कितना सहज है। बच्चे ढेर बैठे हैं। समझते हैं हम घड़ी-2 भूल जाते हैं। 2½ घंटे से जास्ती चार्ट कोई का नहीं रहता। पूछते हैं तो कहते हैं हम तो सदैव करता हूँ। हम तो उनके है ही। बाप को याद करने से स्वर्ग का वर्सा

मिलता है। वहाँ देवताएँ रहते हैं। तो दैवीगुण भी धारण करना है। बाप से राय भी लेनी है। यह देवताएँ सर्वगुण सम्पन्न हैं। तो ऐसा बनना ही है। बाप कहते हैं मैं पावन बनने का रास्ता बताने आया हूँ। जो पहले-2 आये होंगे वही आकर पुरुषार्थ करेंगे। इतनी सहज होते भी माया बहुत कमाल करती है। ऐसी जबरदस्त है जो ज़रूर जीत पाती होगी। जब तक विनाश हो तब तक लड़ती रहेगी। युद्ध पूरी हुई तुम्हारा ज्ञान खलास हो जावेगा। तुम बच्चों को बाप पढ़ाते कितना ऊँच हैं; परंतु कितना साधारण बैठे हो। सभी कहते हैं हम युनिवर्सिटी में जाते हैं। स्कूल में भी नहीं, कॉलेज भी नहीं, युनिवर्सिटी में। तो मनुष्य वण्डर खावेंगे ना! यह शिवबाबा की एक ही हट्टी है। जिस हट्टी से बेहद का वर्सा मिलता है। सच्ची-2 जवाहरात यह है। सच्ची-2 ज्ञान रत्नों की हट्टी यह है। तो इकट्ठा करना चाहिए। जितना जो रत्न इकट्ठा करते हैं उतना ऊँच पद पावेंगे। अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।